५६. ग्राम/मोहल्ला परिवार समूह सभा

दिनांक -२४-०१-२०१२

मूल रूप में परिवार, जैसा सभी विधाओं का धारक, वाहक होता है इसी प्रकार हर स्थली परिवार मानव संस्कृति, सभ्यता का धारक, वाहक तथा सभा क्रम में विधि, व्यवस्था का धारक, वाहक है | इस विधि से मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था परम्परा के रूप में होने का सूत्र होता है | इसका व्याख्या पूरा परिवार ही है अथ से इति तक | इस क्रम में विधि, व्यवस्था का धारक, वाहक सभा को बताया गया है | विधि का स्वरूप मानवीय आचार संहिता रुपी संविधान के रूप में पहचाना गया है | संस्कृति, सभ्यता को विकसित चेतना विधि से आचरण के रूप में पहचाना गया है | आचरण का स्वरूप व्यवहारमूलक होना, विचारमूलक, अनुभवमूलक, रहना परम्परा के रूप में देखा गया है | इसे भली प्रकार से जाँचा गया है, आचरण करके देखा गया है | अभी तक कोई प्रतिकूलता देखने को नहीं मिला है | कभी प्रतिकूलता तैयार होने पर उसका समाधान अनुसंधानित करने वाला कोई सपूत धरती पर ही पैदा होगा | क्योंकि सिद्धांत यही है कि समस्या है तो समाधान है ही | समाधान की अपेक्षा में समस्या का उदय होता है | समस्या हो समाधान न हो ऐसा होता नहीं | इसे आबाल, वृद्ध में पहचाना जा सकता है | मानव अथवा हर नर-नारी ज्ञानावस्था में है | ज्ञानावस्था का मतलब ही है समाधान का अपेक्षा होना | समाधान में अध्ययनपूर्वक पारंगत होना होता है | दूसरा भाषा से समाधान की अपेक्षा में ही समस्या से पीड़ित होना होता है |

अथवा समस्या का पीड़ा तभी होता है जब समाधान की अपेक्षा होती है | समाधान का अपेक्षा न रहने की स्थिति में मानव अवैधता को ही वैध मानता है | इसी क्रम में मानव आज की स्थिति में सभी अवैधता को वैध मान चुका है | समाधान की अपेक्षा क्लिष्टता में फंसता जा रहा है | मानव जाति चाहे ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी रूप में प्रचलित हो अथवा पहचान में आता हो सभी सुविधा, संग्रह के चक्कर में ही है | श्रमशीलता लुप्त होता जा रहा है | श्रमशीलता का लुप्तता में ही मानव अपराधी हुआ है | दूसरा भाग संघर्ष, युद्ध है | संघर्ष, युद्ध के लिये जो मानसिकता तैयार होता है वह जय- पराजय या हार- जीत ही इसका अंतिम परिणाम है | इसमें किसका कल्याण होने वाला है | लाभोन्मादी, भोगोन्मादी, कामोन्मादी पक्ष को बुलंद रखने के लिये सुविधा, संग्रह है | संघर्ष व युद्ध भी इसी से प्रेरित है | हर मानव अपनी समझदारी से अनुसंधान करना सम्भव नहीं है | इसीलिये परम्परा का आवश्यकता है | परम्परा अभी तक व्यक्तिवाद, समुदायवाद के रूप में ही है | मानववाद, सह-अस्तित्ववाद विकल्प के रूप में नहीं पहुंच पाया है | मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर एक दूसरे का विकल्प नहीं हो पाये | ये तीनों अपना ढपली अपना-अपना राग अलापने में ही हैं | एक दूसरे को समझने समझाने के पक्ष में नहीं हैं | अभी तक के सोच में सबका समान उद्देश्य शुभ ही है | सब शुभ चाहते हैं |

शुभ कार्य का एकरूपता नहीं हो सकती, ऐसा निश्चय कर रखे हैं | इसमें एकरूपता का रास्ता कहाँ है? चाहने मात्र से होता नहीं है | होने का निरंतरता ही परम्परा है | इसी विधि से समझदार होना बहुत आवश्यक है | समझदारी का ही परम्परा होता है | इसी क्रम में मानव अपने आवश्यकता को भली प्रकार से समझ सकता है | हर मानव अपना पहचान बनाना चाहता है | कम से कम परिवार में ज्यादा से ज्यादा विश्व मानस में | अभी तक पहचान का आधार संघर्ष, युद्ध, सुविधा व संग्रह ही है | जबकि हर मनुष्य को शिक्षा-संस्कार सुलभता, न्याय-सुरक्षा सुलभता, उत्पादन-कार्य सुलभता , विनिमय- कार्य सुलभता, स्वास्थ्य-संयम सुलभता की आवश्यकता है | इसे भली प्रकार से जाँच चुके हैं | इसी के लिये विकल्प रूप में विकल्पात्मक

शिक्षा उपलब्ध है | इसमें मानव संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था अध्ययनगम्य है | साथ में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था अध्ययनगम्य है | आचरण के रूप में सुविधा, संग्रह के स्थान पर समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व का अध्ययनगम्य होना सुलभ हो गया है या हो चुका है | समाधान ही मानव को सुख रूप में अनुभव में परिवर्तित होता है | समृद्धि में सुविधा, संग्रह विलय होता है | समझदारी में अर्थात विकसित चेतना के अध्ययन से रहस्यवाद, अतिवाद विलय हो जाते हैं | इसका आवश्यकता हर मानव को है | ऐसा मेरा सोचना है इसलिए यह प्रस्ताव प्रस्तुत है |

परिवार मोहल्ला समूह सभा में उक्त सभी सकारात्मक पक्ष प्रमाण रूप में वर्तमान रहते हैं | इसी के साथ विधि व्यवस्था में पारंगत रहने वाले व्यक्ति भागीदारी किये रहते हैं | इसी क्रम में ग्राम/मोहल्ला परिवार समूह सभा का गठन के लिये हर ग्राम/मोहल्ला सभा में से 1 व्यक्ति निर्वाचित रहेगा | निर्वाचित सदस्य १० व्यक्ति, एक सभा गठित करेंगे जिसमें सबका अधिकार समान रहेगा | दसों सदस्यों का प्रवृत्ति का आलेख अथवा उल्लेख रहेगा | प्रवृत्ति का मतलब कार्य प्रवृत्ति | कार्य प्रवृत्ति का मतलब अपने क्षेत्र में विकल्पात्मक शिक्षा-संस्कार सुलभ रहने का पक्ष में, इसी प्रकार अपने-अपने क्षेत्र में न्याय सुलभ होने के पक्ष में, उत्पादन- कार्य सुलभ होने के पक्ष में, विनिमय-कार्य सुलभ होने के पक्ष में, साथ में गिरने से, दुर्घटनवश प्राप्त परेशानियों को दूर करने के लिये, साथ में असाध्य रोगों को ठीक करने के लिये विशेषज्ञता को बनाये रखने में सजग रहना, प्रवृत्त रहना, प्रमाण प्रस्तुत करना, यही प्रवृत्ति का तात्पर्य है | इसी विधि से हर परिवार वर्तमान में विश्वास करने योग्य होता है | उक्त सभी विधाओं में व्यवस्था सर्व सुलभ होने की स्थिति में भविष्य में आश्वस्त होना होता है | उक्त विधि से मानव परम्परा, एक धरती पर रहते हुए, एक राष्ट्र का अनुभव कर सकते हैं | फलस्वरूप मानव जाति एक अर्थात ज्ञानावस्था के रूप में एक जाति, एक धर्म; सुख रूप में एक धर्म का अनुभव होता है | फलस्वरूप ही सुख होना देखा गया है | पूरा ग्राम/मोहल्ला परिवार सभा क्षेत्र में प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक परिवार को सुलभ हुआ या नहीं हुआ इसे जाँच कर रखना हर परिवार सभा का अधिकार रहेगा | अपने अधिकार का प्रयोग जिस तिथि में करेगा उसका उल्लेख रहेगा | यही मानव का इतिहास रहेगा | इसी प्रकार मानवाधिकार सर्वसुलभ होने का व्यवस्था बनता है | मानवाधिकार ही वर्तमान में विश्वास, भविष्य में आश्वस्त होने का एकमात्र आधार है | इसे जीकर देखना ही एकमात्र कार्यक्रम एवं प्रमाण है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक - मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म. प्र.)